बेज़ुबानों के मसीहा बने विवेक

सदफ़ ज़रीन

बिहार

कोरोना महामारी से उत्पन्न संकट ने पूरी दुनिया को सकते में डाल दिया है। दुनिया की बड़ी से बड़ी महाशक्ति इस अदृश्य वायरस के आगे बेबस नज़र आ रही है। चुटकी में परमाणु बम बना लेने वाली दुनिया की प्रयोगशालाएं इस छोटे से जीवाणु को ख़त्म करने की दवा बनाने में अक्षम साबित हो रही हैं। ऐसी विकट परिस्थिति से निपटने का एकमात्र माध्यम सोशल डिस्टेंसिंग है। यही कारण है कि दुनिया के सभी देशों ने इसका पालन करते हुए लॉक डाउन की घोषणा कर रखी है। जिसके अंतर्गत सभी प्रकार की मानव गतिविधियों को रोक दिया गया है।

भारत में भी लॉक डाउन के दौरान सभी प्रकार की गतिविधियों पर रोक लगा दी गई। देश के पूर्वी राज्य बिहार में भी कोरोना से निपटने के लिए राज्य सरकार ने एहतियाती कदम उठाते हुए पूरी कड़ाई से लॉक डाउन करवाया है। लेकिन इसका नकारात्मक पहलू यह रहा कि लोगों के सामने रोज़ी रोटी का संकट आ गया। ऐसी मुश्किल घड़ी में कई सामाजिक संगठन आगे आये जिन्होंने गरीब और मज़दूरों के लिए खाने का प्रबन्ध किया ताकि उन्हें भूखा न रहना पड़े।

इस लॉक डाउन से जहाँ आम आदमी प्रभावित हुआ वहीं बहुत से बेज़ुबान भी ऐसे हैं जिन्हें खाने के संकट का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन इस आपाधापी में अब तक किसी का भी ध्यान इस ओर नहीं गया था। राजधानी पटना की सड़कों पर ऐसे बहुत से लावारिस और आवारा जानवर घूमते हैं जिन्हें सामान्य दिनों में लोग खाने को दे दिया करते थे। लेकिन लॉक डाउन की वजह से अब ऐसे लोगों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है। वहीं होटल, रेस्त्रां और ढाबा के भी बंद हो जाने से इन पशुओं के सामने पेट भरने का संकट उत्पन्न हो गया है।

ऐसी मुश्किल घड़ी में दीघा आशियाना रोड के रहने वाले विवेक विश्वास उनके लिए मसीहा बन कर सामने आये हैं। विवेक सड़कों पर घूम घूम कर लावारिस और आवारा पशुओं को खाना खिला कर मानव धर्म निभा रहे हैं। वह रोज़ाना इन बेज़ुबानों को ढूंढने निकल पड़ते हैं और उन्हें खाना खिलाते हैं। विवेक यह काम बिना किसी की मदद से निःस्वार्थ सेवा से कर रहे हैं। उनके इस जज़्बे से प्रेरित होकर कई लोग भी सामने आ रहे हैं और अपने सामर्थ्यनुसार इस नेक कार्यों को अंजाम दे रहे हैं। विवेक द्वारा शुरू किया गया यह काम हम सब के लिए प्रेरणादायक और अनुकरणीय है।